तप एवं व्रत

विदुषीरत्न आर्यिका १०५ विशुद्धमती माताजी

तप धर्म की महत्ता सर्वोपरि है। स्वार्थ सिद्धी में पूज्यपाद स्वामी ने कहा है कि ''कर्मक्षयार्थ तप्यत इति तप'' अर्थात कर्म क्षय के लिये जो तपा जाता है उसे तप कहते हैं। ''अनशनं नाम अशन-त्याग:'' अर्थात भोजन त्याग करने का नाम अनशन तप है। चेतन वृतियों को भोजन आदि के विकल्पों से मुक्त करने के लिये अथवा क्षुधा वेदनादि के समय भी साम्यरस में लीन रहकर आत्मिक बल की वृद्धि के लिये अनशन तप किया जाता है। अत: अनशन, तप, मोक्ष मार्ग में सहयोगी हैं। अर्थात जो पुरुष मन और इन्द्रियों को जीतता है, निरन्तर स्वाध्याय में तत्पर रहता हैं वह कर्मों की निर्जरा हेतु आहार त्याग करता हैं। उसके अनशन तप होता हैं।

यह अनशन तप दो प्रकार का है

१. प्रोषध:- दिन में एक बार भोजन करने को

२.उपवास:- भोजन का सर्वथा त्याग

उपवास दो प्रकार के होते है

1. अवघृत (नियत) कालीन अनशन तप

एक दिन में भोजन की दो बेला होती है। चार भोजन बेला के त्याग को चतुर्थ अर्थात एक उपवास कहते है। जैसे सप्तमी और नवमी को एक बार भोजन तथा अष्टमी का उपवास, इस प्रकार एक उपवास में चार बेला भोजन का त्याग, दो उपवास में छ: बेला त्याग, तीन उपवास में आठ बेला त्याग होता हैं। इसी प्रकार दशम्, द्वादश, मास, कनकावली, एकावली मुरज तथा मद्य विमान आदि जो जितने भेद हैं। वे सब अवघृत काल अनशन तप के अन्तर्गत ही है।

2. अनवघृत (सर्वासन त्याग तप)

जीवन पर्यन्त के लिये भोजन का त्याग। यह संल्लेखना के समय ही किया जाता है।

तप के भेद

बाह्य तप:-

१. अनशन	उपवास करना
२. उनोदर	भूख से कम खाना
३. वृति परिसंख्यान	भोजन को जाते हुए अटपटी प्रतिज्ञा लेना।
४. रस परित्याग	छ: रस या कोई रस छोड़ना
५. विविक्त शंयासन	एकान्त स्थान में सोना।
६. काय क्लेश	सर्दी गर्मी आदि शारीरिक कष्ट सहन करना

आन्तरिक तप:-

१.	प्रायश्चित	दोषों का दण्ड लेना
२.	विनय धारण करना	आदर करना
३.	वैयावृत	रोगी या साधु की सेवा करना
४.	स्वाध्याय	शास्त्र पढ़ना, पढ़ाना, विचारना
५.	वयुत्सर्ग	शरीर से मोह छोड़ना
६.	ध्यान	तत्परता से आत्म स्वभाव में लीन होना।

व्रत गुरु के पास लिये जाते है। यदि गुरु न हो तो जिनेन्द्र देव के सम्मुख निम्न संकल्प पढ़कर व्रत ग्रहण करना चाहिये।

ॐ अद्य भगवतो महापुरूषस्य ब्रह्मणों मते मासानां मासोत्तम मासे..... पक्षे.....तिथौ ..... वासरे जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... प्रान्ते ..... नगरे .....एतत् अवसर्पिणी -कालावसान -चतुर्दश -प्राभृत-मानिमानित-सकल-लोक-व्यवहारे श्री गौतमस्वामि-श्रेणिक-महामण्डलेश्वर-समाचरित-सन्मार्गावशेषे ..... वीर निर्वाण-संवत्सरे अष्टमहाप्रातिहार्यदि-शोभित-श्रीमदर्हत्परमेश्वर-प्रतिमा-सन्निधौ अहम् .....व्रतस्य संकल्पं करिष्ये। अस्य व्रतस्य समाप्ति-पर्यन्तं में सावद्य-त्याग:गृहस्थाश्रम-जन्यारम्भ-परिग्रहादीनामपि त्याग:।

सामान्यत: व्रतो के नौ भेद है :- सावधि, निरवधि, देवसिक, नैशिक (रात्रिक), मासावधि, वर्षावधि, काम्य (कामना पूर्वक) अकाम्य एवं उत्तमार्थ इन उपर्युक्त नौ भेदों के अन्तंगत आनेवाले व्रतों में से कुछ व्रतों का विवेचन किया जा रहा है। इस प्रकार इन व्रतों को अथवा अन्य भी और व्रतो को पूर्ण विधि विधान पूर्वक करना चाहिये। यहाँ उपयुक्त व्रतो की विधि संक्षिप्त लिखी गई है। अत: कोई भी व्रत ग्रहण करने से पूर्व उसकी पूर्ण विधि गुरूमुख से समझ लेना चाहिये। अथवा व्रत विधान संग्रह, वर्धमान पुराण, हरिवंश पुराण, किशनसिंह क्रिया कोष एवं व्रत तिथि निर्णय आदि ग्रंथों में देख लेना चाहिये।

व्रत के दिनों में अभिषेक, पूजन, आरती, स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय, जाप एवं आत्मचिंतन अवश्य करना चाहिये। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा यथाशक्य आरंभ-परिग्रह का त्याग भोगोपभोग की वस्तुओं का प्रमाण एवं रात्रि जागरण करना चाहिये। आत्म परिणामों को निर्मल एवं विशुद्ध रखने का प्रयास भी अतिआवश्यक हैं। व्रत पूर्ण हो जाने के बाद उद्यापन अवश्य करना चाहिये। अर्थात मण्डल विधान का पूजन करना, शक्त्यानुसार मंदिर बनवाना, प्रतिष्ठा कराना, जिर्णोद्धार कराना, शास्त्र प्रकाशित कराना, चारों प्रकार का दान देना, साधर्मीयों को भोजन कराना एवं गरीब अनाथ विधवाओं को भोजन वस्त्र तथा औषधी आदि देना चाहिये। उद्यापन के बाद निम्न लिखित संकल्प पूर्वक व्रत का समापन करना चाहिये।

ॐ आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे शुभे ..... मासे..... पक्षे .....अद्य .... तिथौ श्रीमदर्हत्प्रतिमा-सेन्निद्यौ पूर्व यद् व्रतं गृहीतं तस्य परिसमाप्ति करिषये-अहम् प्रमादाज्ञान-वशात् व्रते जायमान-दोषाः शान्तिमुपयान्ति ! ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा। श्री मज्जिनेन्द्रचरणेषु आनन्दभक्तिः सदास्तु, समाधिमरणं भवतु पाप विनाशनम् भवतु। ॐ ह्रीं अ सि आ उ साय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा। यह संकल्प पढ़कर श्री फल, सुपारी, अथवा अन्य कोई फल जिनेन्द्र भगवान या गुरू के समक्ष चढ़ाकर नमस्कार करें। और नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप्य करें।

नौ भेदों के अन्तर्गत आनेवाले व्रतों में से कुछ व्रतों का विवेचन

1. अक्षय तृतीया व्रत

यह व्रत वैशाख शुक्ला तृतीया को होता है। इस दिन उपवास करें, अहर्निश, धर्मध्यान में बितावें तथा "ॐ ह्रीं ऋषभजिनेन्द्राय नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस प्रकार तीन वर्ष पर्यन्त करे, पश्चात् तीन-तीन उपकरण मन्दिर जी में भेंट करें। पात्र दान दें, साधर्मी को भोजन करावे और गरीबों को आहार आदि दान देवे।

2. अक्षय दशमी व्रत

श्रावण शुक्ला दशमी को पूजन विधान पूर्वक धर्म प्रभावना के साथ व्रत करें। "ॐ ह्रीं ऋषभजिनेन्द्राय नमः" मंत्र की त्रिकाल जाप देवे। १० वर्ष में व्रत पूरा कर उद्यापन करें।

3. अक्षय निधि व्रत

१० वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला दशमी और भाद्रपद कृष्णा दशमी को उपवास करें, इनके बीच २८ दिन एकासन करें एवं महामन्त्र (णमोकार) का त्रिकाल जाप करें। १० वर्ष में २० उपवास और २८० एकाशन होंगे। पश्चात उद्यापन करें।

4.अनन्त चतुर्दशी व्रत

भाद्रपद शुक्ला ११-१२-१३ को विशेषतया श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र की पूजन कर एकासना करे, चतुर्दशी को उपवास करें, अहर्निश धर्मध्यान में तल्लीन रहते हुए "ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनन्तकेवलिने नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें, पूर्णमा को सुपात्र दान देने के पश्चात एकाशना करे, व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

5. अनस्तमी व्रत

प्रतिदिन सूर्योदय के दो घड़ी पश्चात तथा सूर्यास्त से दो घडी पूर्व भोजन कर लें, बीच के शेष समयों में चारों प्रकार के आहार का त्याग करें और महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

6. अश्विनी व्रत

अश्विनी नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन उपवास करना इस प्रकार एक वर्ष में २८ उपवास करें और उपवास के दिन महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

7. अष्टमी व्रत

प्रत्येक मास की प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें। इस प्रकार आठ वर्ष की १९२ अष्टमी तथा दो अधिक मासों की चार अष्टमी। कुल १९६ अष्टमीयों के १९६ उपवास करें और "ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपतये नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

8. अष्टाह्निक व्रत

यह व्रत प्रतिवर्ष, आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णिमा पर्यन्त किया जाता है। इस व्रत की पाँच मर्यादाए है।(१) १७ वर्ष में(१७ गुणा ३)५१ अष्टाह्निकाएँ, ८ वर्ष में २४, ५ वर्ष में १५, ३ वर्ष में ९ और एक वर्ष में ३ अष्टाह्निकाओं में से अपनी शक्ति के अनुसार करना चाहिये। यह व्रत उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य के भेद से तीन प्रकार हैं। उत्कृष्ट-सप्तमी के पूर्वार्ध भाग में एकाशन कर अष्टमी से पूर्णिमा पर्यंत (आठ) उपवास करें, पश्चात प्रतिपदा को दोपहर के बाद पारणा करें। मध्यम सप्तमी को एकाशन, अष्टमी को उपवास, नवमी को पारणा, दशमी को भात, जल, एकादशी को ऊनोदर, द्वादशी को पूरा भोजन, त्रयोदशी को जल सहित नीरस एक अन्न, चतुर्दशी को भात, मिर्च व जल, पूर्णिमा को उपवास और प्रतिपदा को पारणा करें। जघन्य-सप्तमी को दोपहर पश्चात से पूर्णिमा को दोपहर तक पूर्ण शील का पालन धर्मध्यान सहित मंदिर जी में निवास मौन सहित, अन्तराय टालकर दिन में एक बार भोजन करें। शक्तिहो तो अष्टमी और पूर्णिमा का उपवास करें। प्रत्येक दिन अपने अपने दिन वाले त्रिकाल जाप करें। अष्टमी को - ॐ ह्रीं नंदीश्वर-संज्ञाय नमः। नवमी को - ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति-संज्ञाय नमः। दशमी को - ॐ ह्रीं त्रिलोकसार-संज्ञाय नमः। एकादशी को - ॐ ह्रीं चतुर्मुख-संज्ञाय नमः। द्वादशी को - ॐ ह्रीं महालक्षण-संज्ञाय नमः। त्रयोदशी को - ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान-संज्ञाय नमः। चतुर्दशी को - ॐ ह्रीं सर्वसम्पति-संज्ञाय नमः। पूर्णिमा को - ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज -संज्ञाय नमः।

9. आकाश पंचमी व्रत

भाद्रपद शुक्ला पंचमी को चारों प्रकार के आहार-जल का त्याग कर उपवास करें, जिनालय में जाकर अष्टद्रव्य से जिनेन्द्र का अभिषेक पूजन करें। पश्चात रात्रि के समय खुले मैदान में या छत पर बैठकर भजन पूर्वक जागरण करें, तथा वहीं सिंहासन पर चौबीस-तीर्थंकरों की प्रतिमा विराजमान करें और प्रत्येक पहर में अभिषेक पूजन करें। यदि उस समय उस स्थान पर वर्षा आदि के कारण उपसर्ग आवें तो शान्ति पूर्वक सहन करें परन्तु स्थान न छोड़ें। तीनों समय महामन्त्र (णमोकार मंत्र) का जाप्य करें। इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यंत व्रत करके पश्चात उद्यापन करें।

10. आचाम्ल वर्धन व्रत

(सौवीर भुक्ति) व्रत - व्रत प्रारम्भ करने के पहिले दिन एक स्थान पर बैठकर एक बार का परोसा हुआ भोजन संन्तोष पूर्वक करें। अगले दिन एक उपवास करें, पश्चात एक ग्रास वृद्धि के क्रम से एक ग्रास से लेकर१० ग्रास पर्यन्त दस दिन तक भात और इमली का भोजन करें, उससे अगले दिन से पुनः एक एक ग्रास कम करते हुए दसवें दिन एक ग्रास ग्रहण करें, पश्चात् अगले दिन दोपहर के बाद एक बार का परोसा भोजन करें। त्रिकाल महामन्त्र का जाप करें।

11. आचार वर्धन व्रत

इस व्रत में ११९ दिन लगते है। जिसमें १०० उपवास और १९ पारणा होती है। एक उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा इसी प्रकार ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० , ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २ और एक उपवास करें तथा बीच बीच में एक एक पारणा करें। यह व्रत निर्भग(अखण्ड) रूप से करे। त्रिकाल महामंत्र का जाप करें।

12. आदिनाथ जयन्ती व्रत

आदिनाथ भगवान की जन्म तिथि चैत्र कृष्णा ९ वीं को उपवास व अभिषेक पूर्वक पूजन करे।'' ॐ ह्रीं वृषभनाथाय नमः ''इस मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

13. आदिनाथ निर्वाण व्रत

भगवान आदिनाथ की निर्वाण तिथि माघ कृष्णा १४ को उपवास करें, अभिषेक पूर्वक पूजन करें और ''ॐ ह्रीं वृषभनाथाय नमः'' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

14. आदिनाथ जयन्ती व्रत

भगवान की दिव्यध्वनि के प्रथम दिन फाल्गुन कृष्णा ११ को उपवास अभिषेक पूजन करें और ''ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथाय नमः ''इस मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

15. ऋषिपंचमी व्रत

यह व्रत आषाढ़ शुक्ला पंचमी से प्रारम्भ कर ५ वर्ष ५ माह पर्यंत प्रत्येक माह की शुक्ल पंचमी को उपवास करें और महामंत्र का त्रिकाल जाप करें।

16. एकावली व्रत

एक वर्ष पर्यन्त बराबर प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की १, ५, ८, और १४ तथा कृष्ण पक्ष की ४, ८, १४ इन सात तिथियों में अभिषेक पूजन पूर्वक उपवास करें। अर्थात एक वर्ष में इन सात तिथियों के ८४ उपवास करें ओर णमोकार मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

17. एसोनव व्रत

पहिले एक वृद्धि कम से १ से लेकर ९ , उपवास तक करे , फिर एक हानि क्रम से ९ से लेकर एक उपवास तक करें , बीच में एक एक पारणा करें। इस प्रकार करने से ४५ उपवास होंगे । यहीं पूर्ण विधि नो बार निरन्तर करता जाए , जिससे (४५ गुणा ९) = ४०५ उपवास ८१ पारणाओं पर , ४८६ दिनों में व्रत पूर्ण होगा। व्रत के दिन अभिषेक पूजन करें तथा णमोकार मन्त्र का त्रिकाल जाप करें।

18. एसोदश व्रत

पहिले एक वृद्धि क्रम से एक से लेकर १० उपवास तक करें, पश्चात् एक हानि क्रम से १० से आरम्भ कर एक उपवास करें, बीच में एक एक पारणा करें। इस प्रकार ५५ उपवास होंगे। यहीं पूर्ण विधि दश बार निरन्तर करने से कुल ६५० दिनों में ५५० उपवास और १०० पारणाएँ होंगी। उपवास के दिन अभिषेक पूजन तथा महामंत्र का त्रिकाल जाप करें।

19. कंजिक व्रत

किसी भी मास की पड़वा से प्रारम्भ करके ६४ दिन पर्यन्त मात्र कांजी आहार (भात और जल) लेना। शक्ति हो तो दुगना, तिगुना व्रत भी कर सकते है। अभिषेक, पूजन एवं नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करें।

20. कनकावली व्रत

मासिक कनकावली-आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, पंचमी और दशमी तथा कार्तिक कृष्णा दोज, षष्ठी और द्वादशी इस प्रकार छः उपवास करें।

वार्षिक कनकावली - प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की १, ५, १०, और कृष्ण पक्ष की २, ६, १२ तिथियों के उपवास करें। इस प्रकार एक वर्ष में ७२ उपवास करें। इस व्रत में मास गणना अमावस्या से अमावस्या पर्यन्त की जाती है।

बृहद्कनकावली:- इस विधि में ५२२ दिनों में ४३४ उपवास और ८८ पारणा होती है। एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, पश्चात ९ बार ३-३ उपवास और एक एक पारणा करें। पश्चात एक-एक के वृद्धिक्रम से एक से प्रारम्भ कर १६ तक उपवास करें, बीच बीच में एक एक पारणा करें। पश्चात ३४ बार ३-३ उपवास और एक-एक पारणा करें, पश्चात ९ बार तीन-तीन उपवास और एक-एक पारणा करें और इसके पश्चात दो उपवास एक पारणा तथा एक उपवास एक पारणा करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप तथा अभिषेक पूर्वक पूजन करें।

21. कर्मक्षय व्रत

आठ कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ होती है। इनके नाशार्थ १४८ उपवास निम्न प्रकार से करना चाहिये। सात चतुर्थियों के ७ उपवास, तीन सप्तमियों के ३ उपवास, ३६ नवमियों के ३६ उपवास, एक दशमी का एक उपवास, सोलह द्वादशियों के १६ उपवास और ८५ चतुर्दशियों के ८५ उपवास करें। ''ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप तथा अभिषेक पूजन करें।

अन्य विधि - २९६ दिन तक लगातार एक उपवास और पारणा करते हुए १४८ उपवास १४८ पारणा करें तथा '' ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय सिद्धाय नम:'' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

22. कर्मचूर व्रत

इस व्रत की दो विधियाँ है। प्रथम विधि- प्रथम आठ अष्टमियों के ८ उपवास, दूसरी आठ अष्टमियों को कांजिक (भात और जल का) आहार, तीसरी आठ अष्टमियों को केवल तन्दुलाहार, चौथी आठ अष्टमियों को एक ग्रास आहार, पाँचवीं आठ अष्टमियों को मात्र एक कुरछी आहार, छठी आठ अष्टमियों को एक रस व एक अन्न का आहार, सातवीं आठ अष्टमियों को एक बार का परोसा (एकलठाना) भोजन करें। आठवीं आठ अष्टमियों को रूक्ष अन्न का आहार करें, तथा '' ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने नम:'' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

दूसरी विधि - उपर्युक्त क्रम में ही - नं० १ वाले में आठ उपवास, नं० २ में एकलठाना, नं० ३ में एक ग्रास, नं० ४ में नीरस भोजन , नं० ५ में एक ही प्रकार के फलों का आहार, नं० ६ में केवल चावल, नं० ७ में लाडू, नं० आठ में कांजी आहार करें। और त्रिकाल जाप्य करें।

23. कर्मनिर्जरा व्रत

सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के लिए आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करें और '' ॐ ह्रीं दर्शन - विशुद्धये नम:'' का जाप्य करें। सम्यग्ज्ञान की भावना हेतु श्रावण शुक्ला १४ का उपवास और '' ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम:'' का जाप्य करें। सम्यक्चारित्र की भावना के लिए भाद्रपद शुक्ला १४ का उपवास और '' ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नम:'' का जाप्य करें और सम्यक् तप की भावना के लिये आसोज शुक्ला १४ का उपवास और '' ॐ ह्रीं सम्यक्-तप से नम:'' का त्रिकाल जाप्य करें।

24. कलिचतुर्दशी व्रत

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आसोज मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशियों के उपवास निरन्तर चार वर्ष तक करना और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करना।

25. कल्याणक व्रत

जिस दिनकल्याणक की तिथि हो उसके एक दिन पहिले दोपहर को एक बार का परोसा भोजन करें। तिथि के दिन उपवास और पारणा के दिन आचाम्ल (इमली भात) खावें। इस प्रकार पंचकल्याणक की १२० तिथियों के १२० उपवास ३६० दिन में पूरे करे, तथा जिस तीर्थंकर का कल्याणक हो उसका त्रिकाल जाप्य करें।

26. कवलचन्द्रायण व्रत

किसी भी मास की अमावस्या को उपवास, इससे आगे प्रतिपदा को एक ग्रास, दोज को दो ग्रास, तीज को तीन ग्रास इत्यादि क्रम से एक-एक ग्रास बढ़ाते हुए चतुर्दशी को १४ ग्रास, पूर्णिमा को उपवास इसके आगे विपरीत क्रम से कृष्णा एकम को १४ ग्रास,

दोज को तेरह इत्यादि क्रम से घटाते हुए कृष्णा १४ को एक ग्रास और अमावस्या को उपवास कर एक मास में व्रत पूर्ण करें तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

27. काँजी बारस व्रत

१२ वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला बारस को उपवास करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

28. कृष्ण पंचमी व्रत

पाँच वर्ष पर्यन्त प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी को उपवास करे और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

29. कोकिला पंचमी व्रत

आषाढ़ कृष्णा पंचमी से पाँच मास तक प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी का उपवास करें और "ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठीभ्यों नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

30. क्षमावाणी व्रत

आसोज कृष्णा एकम को उपवास करे, सबसे क्षमा याचना करे और साधुर्मियों को फल बांटे।

31. गंध अष्टमी व्रत

३५२ दिन पर्यन्त कुल २८५ उपवास और ६४ पारणा करे तथा महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

32. गरूड पंचमी व्रत

पाँच वर्ष पर्यन्त, प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला पंचमी का उपवास करें और "ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

33. ज्ञानपच्चीसी व्रत

श्रावण शुक्ला चतुर्दशी से प्रारम्भ कर एक वर्ष या बारह वर्ष पर्यन्त चौदहपूर्वो की १४ चतुर्दशी और ग्यारह अंगो की ११ एकादशी इस प्रकार २५ उपवास करें और "ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत - द्वादशांगाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

34. चन्दनषष्ठी व्रत

छह वर्ष पर्यन्त प्रत्येक वर्ष के भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को उपवास करें, अभिषेक पूर्वक पूजन तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

35. चन्द्र कल्याणक व्रत

क्रमशः ५ उपवास, ५ कांजिक (पानी छान कर), ५ एकलठाना (एक बार का परोसा), ५ रूक्षाहार और ५ मुनि वृत्ति से (मौन पूर्वक अन्तराय टालकर) भोजन करें। इस प्रकार २५ दिन तक लगातार करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

36. चतुर्दशी व्रत

१४ वर्ष पर्यन्त प्रत्येक मास की दोनों चतुर्दशियों को १६ पहर का उपवास करें। लौंद के मासो सहित कुल ३४४ उपवास होते हैं। "ॐ ह्रीं अनंतनाथाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

37. चारित्रशुद्धि व्रत

तेरह प्रकार के चारित्र के १२३४ अंग है। अतः १२३४ उपवास करना चाहिये। एक उपवास और एक पारणा के क्रम से यदि यह व्रत निरन्तर किया जाय तो ६ वर्ष, १० मास और ८ दिन में पूरा होता है। व्रत का प्रारंभ भाद्रपद शुक्ला एकम से किया जाता है। व्रतों की संख्या का विवरण - अहिंसामहाव्रत - १४, जीव समास गुणा नव कोटि (मन, वचन, काय गुणा कृत, कारित अनुमोदन)=१२६ उपवास। सत्यमहाव्रत = भय, ईर्षा, स्वपक्षपात, पैशुन्य, क्रोध, लोभ, आत्मप्रशंसा और परनिन्दा ये ८ गुणा ९ कोटि = ७२ उपवास। अचौर्य महाव्रत = ग्राम, अरण्य, खल, एकान्त, अन्यत्र, उपाधि, अमुक्त और पृष्ठ ग्रहण ये ८ गुणा ९

कोटि = ७२ उपवास। ब्रह्मचर्य महाव्रत - मनुष्यपत्नी, देवांगना, तिर्यंचिनी एवं अचेतनी ये चार प्रकार की स्त्रियों गुणा ५ इंद्रिया गुणा ९ कोटि = १८० उपवास। परिग्रह महाव्रत - परिग्रह के प्रकार २४ गुणा ९ कोटि = २१६ उपवास। गुप्ति ३ गुणा ९ कोटि = २७ उपवास समिति के १० प्रकार के सत्य गुणा ९ कोटि = ९० जोड़ एषणा समिति के ४६ दोष गुणा ९ कोटि = ४१४(१२६ जोड़ ७२ जोड़ ७२ जोड़ १८० जोड़ २१६ जोड़ २७ जोड़ ५३९) = १२३४ हुए। उपवास के दिन अभिषेक पूजन करें एवं '' ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा चारित्रशुद्धि - व्रतेभ्यो नमः'' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

38. चौतीस अतिशय व्रत

इस व्रत के ४६ उपवास करें। (१) जन्म के दश अतिशयों के लिए १० दशमियों के; (२)केवलज्ञान के दश अतिशयों के लिये १० दशमियों के (३) देवकृत १४ अतिशयों के लिए १४ चतुर्दशियों के; (४) चार अनन्त चतुष्टयों के लिए ४ चौथ के (५) आठ प्रातिहार्यों के लिए ८ अष्टमियों के आठ उपवास, इस प्रकार कुल ४६ उपवास होते है। '' ॐ ह्रीं णमो अरहन्ताणं'' मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

39. जिनगुण सम्पत्ति व्रत

इस व्रत की तीन विधियाँ है। उत्तम विधि - अर्हन्त भगवान के (१) जन्म के १० अतिशयों की १० दशमियाँ (२) केवलज्ञान के १० अतिशयों की दश दशमियाँ, देवकृत १४ अतिशयों की १४ चतुर्दशियाँ, ८ प्रतिहार्यों की आठ अष्टमियाँ, षोडशकारण भावनाओं की १६ प्रतिपदाएँ; पंचकल्याणकों की ५ पंचमियाँ इस प्रकार ६३ तिथियों के ६३ उपवास १० मास में पूरे करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

मध्यम विधि - क्रमशः एक बेला, और एक एक कर पाँच उपवास, पुनः एक बेला और एक एक कर पाँच उपवास, पुनः १ बेला और एक एक कर पाँच उपवास, पुनः एक बेला और एक एक कर पाँच उपवास तथा ५ वीं बार पुनः एक बेला और एक एक कर पाँच उपवास, इस प्रकार ५ बेला २५ उपवास अर्थात ३५ उपवास और ३० पारणाएँ करें।'' ॐ ह्रीं अर्हन्त परमेष्ठिने नमः'' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

जघन्य विधि - उपर्युक्त ६३ गुणों के उपलक्ष्य में ६३ एकाशना करें तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

40. जिनपूजा पुरन्दर व्रत

किसी भी मास की शुक्ला एकम से अष्टमी पर्यन्त आठ उपवास या एकाशना करें। जिनेन्द्र का अभिषेक पूजन एवं महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

41. जिनमुखावलोकन व्रत

भाद्रपद कृष्णा एकम से आसोज कृष्णा एकम तक अर्थात एक मास पर्यन्त प्रतिदिन प्रातः उठ कर अन्य किसी का मुख देखे बिना भगवान जिनेन्द्र के दर्शन करें, तथा महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

42. जिनरात्रि व्रत

१४ वर्ष पर्यन्त प्रत्येक वर्ष फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को उपवास करे रात्रि को जागरण करें। प्रत्येक पहर में जिन दर्शन करें तथा नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

43. जेष्ठजिनवर व्रत

उत्तम २४ वर्ष, मध्यम १२ वर्ष और जघन्य एक वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष ज्येष्ठ कृष्णा एकम और शुक्ला एकम को उपवास करें, तथा उस मास के शेष २८ दिन एकाशना करें। '' ॐ ह्रीं ऋषभजिनाय नमः'' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

44. णमोकार पैंतीसी व्रत

आषाढ़ शुक्ला ७ से आसौज शुक्ला ७ तक की सात सप्तमियाँ; कार्तिक कृष्णा ५ से पोष कृष्णा ५ तक ५ पंचमियाँ; पौष

कृष्णा १४ से आषाढ़ शुक्ला १४ तक १४ चतुर्दशियाँ; श्रावण कृष्णा ९ से आसौज कृष्णा ९ तक ९ नवमियाँ इस प्रकार ३५ तिथियों के ३५ उपवास करें। णमोकार मन्त्र की पूजन और इसी महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

45. तपोनिधि व्रत

वृहद और लघु के भेद से इस व्रत की दो विधियाँ है।

वृहद विधि- प्रथम दिन उपवास करें, दूसरे दिन एक ग्रास, दो ग्रास आदि एक एक ग्रास वृद्धि क्रम से सांतवे दिन सात ग्रास लेवें, आठवें दिन उपवास अगले दिन उपवास करें पश्चात् पुनः पूर्ववत् एक एक ग्रास की वृद्धि करते हुए सातवें दिन सात ग्रास ग्रहण अगले दिन पुनः उपवास करें पश्चात पुनः पूर्ववत् ग्रास ग्रहण करें इस क्रम से ऐसा सात बार करता चला जाये, जब सातों बार निर्दोष रूप से समाप्त हो जाए तब उसे सप्तसप्तमतपों विधि कहते है। इस उत्तम सप्तसप्तमतपों विधि के अनुसार अष्टअष्टमतपो विधि, नवनवमतपो विधि, दशदशमतपोविधि, एकादशएकादश तपोविधि आदि के क्रम से द्वत्रिंशत् -द्वत्रिंशत् तपो विधि तक करना चाहिए।

लघुविधि - यह विधि उपर्युक्त प्रकार ही है। अन्तर केवल इतना हैं कि यहाँ उपवास नहीं करना चाहिए, केवल वृद्धिगत क्रम से ग्रास ग्रहण करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

46. तपो-शुद्धि व्रत

बाह्य तप के अन्तर्गत अनशन तप के २, अवमौदर्य का १, वृत्ति परिसंख्यान का १, रस परित्याक के ५, विविक्त-शय्यासन का १, कायक्लेश का १, इस प्रकार ये ११ उपवास हुए। अन्तरंग तप के अन्तर्गत प्रायश्चित के १९, विनय के ३०, वेयावृत्ति के १०, स्वाध्याय के ५, व्युत्सर्ग के २, ध्यान का १, इस प्रकार ये ६७ उपवास हुए, तथा कुल मिलाकर ७८ उपवास करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

47. तपोंजलि व्रत

श्रावण मास की प्रतिपदा से एक वर्ष पर्यन्त सूर्यास्त के दो घड़ी पूर्व से लेकर सूर्योदय के दो घड़ी पश्चात् तक चारों प्रकार के आहार का अर्थात् जल का भी त्याग रखे। एक वर्ष पर्यन्त पूर्ण ब्रह्मचर्य अथवा स्वदार संतोष व्रत से रहे तथा प्रत्येक मास के प्रत्येक (कृष्ण - शुक्ल) पक्ष में जिस किसी भी तिथि का उपवास करें किन्तु इतना ध्यान रखे कि उपवास की दोनों पक्ष की दोनों तिथियाँ एक न हों, अलग अलग हों। तथा एक ही पक्ष में दो उपवास न करें। प्रतिदिन "ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यों नमः" इस मन्त्र का १०८ बार जाप्य करें।

48. तीन चौबीसी व्रत

तीन वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णा ३ को उपवास करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

49. तीर्थंकर व्रत

चौबीस तीर्थंकरो के उपलक्ष में लगातार २४ दिन पर्यन्त २४ उपवास करें, "ॐ ह्रीं वृषषदि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें और अभिषेक पूर्वक पूजन विधान करें।

50. तीर्थंकर बेला व्रत

वृषभनाथ का सप्तमी - अष्टमी का उपवास और नवमी को तीन अंजुली शर्बत का पारणा करें। अजितनाथ का त्रयोदशी-चतुर्दशी का बेला तथा १५ को तीन अंजुली दूध का पारणा करें, इसी प्रकार सम्भवनाथ, सुमतिनाथ, सुपार्श्वनाथ, पुष्पदंत, श्रेयान्सनाथ, विमलनाथ, धर्मनाथ, कुन्थुनाथ, मल्लिनाथ, नमि और पार्श्वनाथ भगवान का ऋषभनाथ व्रत तथा अभिनन्दन नाथ, पद्मप्रभ, चन्द्रप्रभ, शीतलनाथ, वासुपूज्य, अनन्तनाथ, शान्तिनाथ, अरनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नेमिनाथ एवं महावीर इन तीर्थंकरों का अजितनाथ भगवान के सदृश करें। "ॐ ह्रीं वृषभदि-चतुर्विंशति-तीर्थंकराय नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

51. तेला व्रत

किसी मास में प्रथम दिन दोपहर को एकाशन करके मन्दिर जी जावे, तीन दिन तक उपवास करें, पाँचवे दिन अभिषेक पूजन करके घर आवे पात्र दान देकर दोपहर को एक स्थान पर मौन पूर्वक एक बार का परोसा भोजन करें। महामन्त्र का त्रिकाल करें।

52. त्रिगुणसार व्रत

क्रमशः १,१,२,३,४,५,४,४,३,३,२ और १ इस प्रकार ३० उपवास करे, बीच के १० पारणा और आदि अन्त में एक एक धारणा -पारणा करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

53. त्रिमुखशुद्धि व्रत

किसी भी मास की किसी भी तिथि को प्रातः, मध्यान्ह और अपरान्ह काल में द्वार पर खड़े होकर पात्र की प्रतीक्षा करना तथा पात्र उपलब्ध हो जाने पर आहार दान देने के उपरान्त भोजन ग्रहण करना। जब तक पात्र दान न दिया जाय तब तक उपवास करना पड़ता है।

54. त्रिलोक तीज व्रत

तीन वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला तीज को उपवास करें। "ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धी अकृत्रिम-जिन-चैत्यालयेभ्यों नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

55. त्रिलोकसार व्रत

त्रिलोकाकार रचना के अनुसार नीचे से ऊपर की ओर ५,४,३,२,१,२,३,४,३,२ और १ इस प्रकार ३० उपवास व बीच बीच के स्थानों में ११ पारणाए करें। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

56. त्रैपन क्रिया व्रत

आठ मूलगुणों की ८ अष्टमी, पाँच अणुव्रतों की ५ पंचमी, तीन गुणव्रतों की ३ तीज, चार शिक्षाव्रतों की ४ चौथ, बारह तप की १२ द्वादशी, समता भाव की एक प्रतिपदा, ग्यारह प्रतिमाओं की ११ एकादशी, चार दान की ४ चौथ, जलगालन की १ प्रतिपदा, रात्रि भोजन त्याग की १ प्रतिपदा, और रत्नत्रय की ३ तीज, इस प्रकार त्रेपन तिथियों के ५३ उपवास करे तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

57. दर्शन विशुद्धि व्रत

उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक इन तीनों सम्यक्त्वों के निःशंकादि आठ अंगों की अपेक्षा २४ अंग होते है। अतः एक उपवास और एक पारणा के क्रम से २४ उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

58. दशलक्षण व्रत

उत्तम, मध्यम और जघन्य के भेद से इस व्रत की विधि तीन प्रकार से कही गई है :-

उत्तम विधिः- १० वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष तीन बार अर्थात माघ, चैत्र और भाद्रपद की शुक्ला ५ से १४ पर्यन्त दश दश दिनों के उपवास करना।

मध्यम विधिः- १० वर्ष पर्यन्त वर्ष में तीन बार शुक्ला ५, ८, ११, और १४ इन चार तिथियों के उपवास और शेष ६ दिन एकाशन करें।

जघन्य विधिः- १० वर्ष पर्यन्त वर्ष में तीन दशों दिन एकाशन करें। "ॐ ह्रीं अर्हम् मुख-कमल-समुदभूतोत्तमक्षमादि-दशलक्षणैकधर्माय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

59. दारिद्रनिर्वति वृत

आसौज मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम गुरूवार को एक बार भोजन करें। शुक्रवार को अभिषेक पूर्वक पूजन करें, सहस्त्र

नाम पाठ करें, सामायिक, स्वाध्याय करें तथा उपवास करें और "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हत सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुभ्यों नमो स्वाहा" इस मंत्र का सुगन्धित १०८ पुष्पों से जाप्य करें, शनिवार को सत्पात्रों को आहार दान देकर पारणा करें। इस प्रकार पाँच शुक्रवारों तक करें।

60. दीपमालिका व्रत

वीर निर्माण तथा कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन उपवास करें, महावीर भगवान की पूजन करें, संध्या समय दीपमालिका प्रज्जवलित करें और "ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामिने नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

61. दुःख हरण व्रत

उत्तम विधिः- इस विधि में चारों गतियों के आधार से उपवास अर्थात बेला की जाती है। सात नरकों से ७ बेला, तिर्यञ्चों के पर्याप्त-अपर्याप्त के दो बेला मनुष्यों के पर्याप्त-अपर्याप्त के दो बेला, सौधर्मेशान का एक बेला सानत्कुमार के अच्युत पर्यन्त के ११ बेला, नव ग्रेवेयको के नो बेला, नव अनुदिशा का एक बेला और ५ अनुत्तरों का एक बेला, इस तरह ३४ बेला और बीच के ३४ स्थानों में २४ पारणा अर्थात यह व्रत १०२ दिनों में समाप्त होता है।

जघन्य विधिः- एक उपवास और एक पारणा के क्रम से १२० उपवास पूर्ण करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

62. दुग्धरसी व्रत

१२ वर्ष पर्यन्त प्रत्येक वर्ष में भाद्रपद शुक्ला १२ को मात्र दूध का आहार लें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

63. द्वादशी व्रत

१२ वर्ष पर्यन्त प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला १२ को उपवास करें। "ॐ ह्रीं अर्हद्वयों नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

64. द्वारावलोकन व्रत

इस व्रत में दो पहर का नियम कर द्वार पर खड़े होकर उत्तम पात्र की प्रतीक्षा करना और मुनिराज को आहार कराकर भोजन करना, यदि मुनिराज का योग न मिले तो ऐलक-क्षुल्लक आदि जो मिले उन्हें आहार कराकर भोजन करें। यदि किसी भी पात्र का योग न मिले तो दोपहर (६ घंटे) बाद भोजन कर लें।

65. द्विकावली व्रत

उत्तम विधिः- एक बेला एक पारणा के क्रम से ४८ बेले करना।

मध्यम विधिः- एक वर्ष पर्यन्त प्रतिमास शुक्ल पक्ष की एकम दूज का, पंचमी, षष्ठी का, अष्टमी नवमी का और चतुर्दशी-पूर्णिमा का तथा कृष्ण प्रक्ष की चतुर्थी, पंचमी का, अष्टमी नवमी का और चतुर्दशी अमावस्या का इस प्रकार सात बेले करें। इस प्रकार १२ मास में चौरासी बेले करें।

जघन्य विधिः- एक बेला दो पारणा, एक एकाशना, इस क्रम से २४ बार दुहराने पर १२० दिनमें २४ बेला, ४८ पारणाऐं और २४ एकाशना होती है। सर्वत्र महामंत्र का या "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्री पार्शनाथ जिनेन्द्राय सर्व शान्ति कराय, सर्व क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय श्रीं क्लीं नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

66. दिव्य लक्षण पंक्ति व्रत

३२ व्यंजन, चौसठ कला और एक सो आठ लक्षण इस प्रकार २०४ लक्षणों का ग्रहण किया है। इसलिये इस व्रत विधि में किसी भी माह से प्रारम्भ कर दो सो चार उपवास और दो सो चार पारणाऐं कर ४०८ दिन में यह व्रत समाप्त होता है। व्रत के दिन महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

67. धन दक लश व्रत

प्रथम विधिः- भाद्रपद कृष्णा एकम से पूर्णिमा पर्यन्त प्रतिदिन चन्दनादि मंगल द्रव्य युक्त कलशों में जिनेन्द्र देव का अभिषेक पूजन करें और महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। ब्रह्मचर्य से रहे तथा भोजन मौन पूर्वक और शुद्ध करें।

दूसरी विधि:- पाँच वर्ष पर्यन्त भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदा के दिन उपवास करें। अभिषेक पूर्वक पूजन करें और "ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं आदिनाथ तीर्थंकराय नमः स्वाहा" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। भाद्रपद से पाँच माह पर्यन्त प्रत्येक शुक्ला प्रतिपदा को भी यह व्रत करने का विधान है।

68. धर्मचक्र व्रत

उत्तम विधि:- धर्म चक्र के एक हजार आरों की अपेक्षा एक उपवास एक पारणा के क्रम से १००० उपवास करें। और आदि अन्त में एक एक बेला प्रथक करे इस प्रकार दो हजार चार दिन (साढ़े पाँच वर्ष और २४ दिनों) में यह व्रत पूर्ण होता है।

मध्यम विधि:- १०१० दिन तक प्रतिदिन एकाशना करें।

जघन्य विधि:- क्रमशः एक उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, पाँच उपवास एक पारणा और एक उपवास और एक पारणा इस प्रकार १६ उपवास और ६ पारणाओं द्वारा २२ दिन में व्रत पूर्ण होता है। सर्वत्र महामंत्र का अथवा "ॐ ह्रीं अरहन्त धर्म चक्राय नमः" इस मंत्र का गुग्गल और धूप द्वारा त्रिकाल जाप्य करें।

69. नन्दसप्तमी व्रत

सात वर्ष पर्यन्त भादों सुदी ७ को उपवास करें, इस व्रत में षष्ठी तिथि से ही संयम ग्रहण करना चाहिये। महामन्त्र का अथवा "ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वविघ्न निवारकाय श्री शान्तिनाथ स्वामिने नमः स्वाहा" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें। (निर्दोष सप्तमी व्रत की भी यही विधि हैं)

70. नन्दीश्वर व्रत

अष्टाह्निक व्रत की जो मध्यम विधि आगे लिखी गई हैं, वहीं विधि नन्दीश्वर व्रत की है।

71. नन्दीश्वर पंक्ति व्रत

यह व्रत १०८ दिन में पूर्ण होता हैं, जिसमें ५६ उपवास और ५२ पारणाऐं होती है। इस व्रत में प्रत्येक दिशा सम्बन्धी ४ एकान्तर उपवास पश्चात एक बेला पश्चात ८ एकान्तर उपवास करें। इस प्रकार सम्पूर्ण व्रत में ४ बेला, ४८ उपवास और ५२ पारणाऐं होती हैं।

लघु विधि:- समयानुसार जब कभी करके भी ४ बेला और ४८ उपवास करके व्रत पूर्ण करें। सर्वत्र "ॐ ह्रीं नन्दीश्वर-द्वीपस्थाकृत्रिम-जिनालयस्य-जिनबिम्बेभ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

72. नमस्कार पैंतीसी व्रत

णमोकार मन्त्र में ३५ अक्षर है, अतः किसी भी मास से प्रारम्भ कर निम्नलिखित तिथियों के ३५ उपवास करें। सप्तमी के सात, पंचमी के पाँच, चतुर्दशी के १४ और नवमी के नौ उपवास करें। अभिषेक पूर्वक पंचपरमेष्ठी का पूजन करें और "ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। पारणा के दिन एकाशन करें।

73. नवकार व्रत

लगातार ७० दिन एकाशना करें और त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप्य करे।

74. नवनिधि व्रत

किसी भी मास की चतुर्दशी से प्रारम्भ करके १४ रत्नों की १४ चतुर्दशी, नवनिधियों की ९ नवमी, रत्नत्रय की ३ तीज, और ५ सम्यग्ज्ञानों की पाँच पंचमी, इस प्रकार ३१ उपवास करें तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

75. नक्षत्रमाला व्रत

किसी भी मास में जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो उस दिन से लेकर एकान्तरा क्रम से ५४ दिन में २७ उपवास पूरे करे। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

76. निःशल्य अष्टमी व्रत

१६ वर्ष पर्यन्त प्रति भाद्रपद शुक्ला ८ को उपवास करे, दिन में तीन बार पूजन करें, तथा णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

77. नित्यरसी व्रत

यह व्रत वर्ष में एक बार आता है। उत्कृष्ट २४ वर्ष तक, मध्यम १२ वर्ष तक और जघन्य एक वर्ष तक किया जाता है। ज्येष्ठ कृष्णा एकम को उपवास और दोज से अमावस्या पर्यन्त एकाशना करें। पश्चात शुक्ल पक्ष एकम का उपवास और दोज से पूर्णिमा पर्यन्त एकाशना करें। "ॐ ह्रीं श्री वृषभजिनाय नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

78. निर्जर पंचमी व्रत

प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ला ५ से प्रारम्भ कर कार्तिक शुक्ला ५ तक की कुल ९ पंचमियों के उपवास ५ वर्ष पर्यन्त करें तथा णमोकार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

79. निर्वाणकल्याणक व्रत

चौबीस तीर्थंकरों की २४ निर्वाण तिथियों में उनसे अगले दिन सहित दो-दो उपवास अर्थात बेला करें, और उन्हीं-उन्हीं तीर्थंकर सम्बन्धी त्रिकाल जाप्य करें।

80. नैशिक व्रत

यह व्रत दो प्रकार का है। तथा यम और नियम दोनों प्रकार से किया जाता हैं।

(१) इस व्रत में रात्रि में खाद्य, स्वाद्य, लेह्य और पेय इन चारों प्रकार के आहार का, स्त्री सेवन का एवं दिवा मैथुन का त्याग किया जाता है।

(२) अमुक रात्रि में अमुख संख्या में भोगोपभोग की (पान, शय्या, आभूषण, पुष्पमाला आदि) वस्तुओं का सेवन करूंगा, शेष का त्याग है। इस प्रकार प्रतिज्ञा की जाती है।

81. पंच-कल्याणक व्रत

वृहद विधिः- प्रथम वर्ष में २४ तीर्थंकरो की गर्भ तिथियों के २४ उपवास, द्वितीय वर्ष में जन्म तिथियों के २४ उपवास, तृतीय वर्ष में तपकल्याणक की तिथियों के २४ उपवास, चतुर्थ वर्ष में ज्ञान कल्याणक के २४ उपवास, पंचम वर्ष में निर्वाण कल्याणक के २४ उपवास - इस प्रकार ५ वर्ष में १२० उपवास करें।

लघुविधिः- एक ही वर्ष में उपर्युक्त सर्व तिथियों के १२० उपवास पूर्ण करें। सर्वत्र "ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशति-तीर्थंकराय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

82. पंचमी व्रत

पाँच वर्ष पर्यन्त भाद्रपद शुक्ला पाँच को उपवास करें, तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

83. पंचविंशति कल्याण भावना व्रत

कल्याण भावनाऐं २५ हैं उन्हें लक्ष्य कर एकान्तर २५ उपवास और पारणाऐं करना, त्रिकाल महामन्त्र का जाप्य करना। २५ भावनाओं के नाम १. सम्यक्तव २. विनय ३. ज्ञान ४. शील ५. सत्य ६. श्रुत ७. समिति ८. एकान्त ९. गुप्ति १० ध्यान ११. शुक्ल ध्यान १२. संक्लेशनिरोध १३. इच्छानिरोध १४. संवर १५ प्रशस्त योग १६ संवेग १७. करूणा १८ उद्वेग १९. भोगनिर्वेद २०. संसार निर्वेद २१. भक्ति वैराग्य २२. मोक्ष २३. मैत्री २४. उपेक्षा २५. प्रमोद भावना।

84. पंचऋतुज्ञान व्रत

एक उपवास एक पारणा के क्रम से १६८ उपवास पूरे करें। "ॐ ह्रीं पंचऋतुज्ञानाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

85. पंचपरमेष्ठी व्रत

(१) इस व्रत में कुल १४३ उपवास किये जाते हैं। अरिहंत के ४६ गुणों के लिए ४ चतुर्थीयों के चार उपवास, आठ अष्टमियों के आठ, बीस दशमियों के बीस, और चौदह चतुर्दशीयों के चौदह उपवास करें और "ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यों नमः" इस मन्त्र का जाप्य करें। सिद्ध परमेष्टी के आठ मूल गुणों के लिये आठ अष्टमियों के आठ उपवास और "ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यों नमः" का जाप्य करें। आचार्य के ३६ मूल गुणों के लिये १२ द्वादशियों के १२, ६ षष्ठीयों के छः, पाँच पंचमीयों के पाँच, १० दशमियों के दश और तीन तृतीयाओं के तीन उपवास और "ॐ ह्रीं आचार्येभ्यों नमः" का जाप्य करें। उपाध्याय के पच्चीस मूल गुणों के लिये, ग्यारह एकादशीयों के ग्यारह और चौदह चतुर्दशीयों के चौदह उपवास तथा "ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यों नमः" का जाप्य करें। साधु परमेष्ठी के अट्ठाईस मूल गुणों के लिए पंद्रह पंचमीयों के १५, छः षष्ठियों के ६ एवं सात प्रतिपदाओं के ७ उपवास और "ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यों नमः" मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

86. पंचमास चतुर्दशी व्रत

इस व्रत की दो मान्यताएँ हैं। १. आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आसौज एवं कार्तिक मासों की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के उपवास अर्थात पाँच उपवास करना। २. उपर्युक्त मासों के दोनों पक्षों की दो दो चतुर्दशीयों के दश उपवास करें। और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

87. परस्पर कल्याणक व्रत

वृहद विधिः- पंच कल्याणक के पाँच प्रतिहारियों के आठ और ३४ अतिशयों के ३४ ये सब मिलकर एक तीर्थंकर सम्बन्धी ४७ उपवास हुए अतः २४ तीर्थंकर के ११२८ उपवास हुए जो एकान्तरे रूप में २२५६ दिन में पूरे करें।

मध्यम विधिः- क्रमशः एक उपवास, चार दिन एक बार का परोसा, तीन दिन भात व जल, दो दिन रूक्षाहार, दो दिन अन्तराय टालकर मौन से मुनि वृति से भोजन और एक दिन उपवास इस प्रकार लगातार १३ दिन तक करें।

लघु विधिः- क्रमशः एक उपवास एक दिन भात व जल एक दिन एक बार का परोसा, एक दिन रूक्षाहार और एक दिन मुनि वृति से भोजन इस प्रकार लगातार ५ दिन करें। सर्वत्र महामन्त्र का जाप्य करें।

88. पल्लव विधान व्रत

क्रमशः १,२,३,४,५,४,३,२,१, इस प्रकार २५ उपवास करें बीच बीच में एक एक पारणा करें।

89. पात्रदान व्रत

प्रतिदिन पात्र दान देने का नियम करना, यदि प्रतीक्षा एवं द्वारा प्रेक्षण करने पर भी पात्र न मिले तो रस परित्याग कर भोजन करें।

90. पुष्पांजली व्रत

पाँच वर्ष तक प्रतिवर्ष भाद्रपद, माघ और चैत्र में शुक्ल पक्ष की (उत्तम विधि) ५ से ९ तक लगातार पांच-पांच उपवास करना। मध्यमः-५, ७, ९, का उपवास तथा ६, ८, को एकाशन करें। जघन्यः- ५, ९, को उपवास तथा ६, ७, ८, का एकाशन करें। सर्वत्र "ॐ ह्रीं पंचमेरूस्थ अस्सी जिनालयेभ्यों नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

91. पुरन्दर व्रत

(१) किसी भी मास में शुक्लपक्ष की एकम से अष्टमी तक के आठ उपवास करके नौवीं को पारणा करना।

(२) प्रतिपदा का उपवास द्वितीया का पारणा इस क्रम से अष्टमी पर्यन्त एकान्तर उपवास करना।

(३) प्रतिपदा से लगातार चार उपवास कर एक अनाज अर्थात एक ही प्रकार की वस्तु से पारणा करना।
(४) प्रतिपदा और अष्टमी का उपवास, शेष दिनों में एकाशना करे। सर्वत्र महामन्त्र का १००८ बार त्रिकाल जाप्य करें। यह व्रत किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में किया जा सकता है।

92. बारह तप व्रत

किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की किसी भी तिथि से प्रारम्भ कर लगातार १२ उपवास, आगे १२ एकाशन, १२ कांजिकाहार, १२ गोरस रहित भोजन, १२ अल्पाहार, १२ एक बार का परोसा मौन सहित भोजन, १२ दिन मात्र मूंग का आहार, १२ दिन मोठ का आहार, १२ दिन चोला का आहार, १२ दिन चनों का आहार, १२ दिन मात्र जल और १२ दिन घृत रहित आहार। इस प्रकार अन्तराय टाल कर मौन सहित भोजन करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें। यह व्रत १४४ दिन में पूर्ण होता है।

93. बारह बिजौरा व्रत

एक वर्ष की २४ द्वादशियों के २४ उपवास करे तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

94. बेला व्रत

प्रथम दिन दोपहर को एकाशन पश्चात् लगातार दो उपवास और अगले दिन पारणा या एकाशन करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

95. भाद्रवनसिंहनिष्क्रीडित व्रत

१,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१३,१२,११,१०,९,८,७,६,५,४,३,२, और एक उपवास क्रम से करें, बीच बीच में पारणा करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

96. भावना पच्चीसी व्रत

किसी भी माह से प्रारम्भ कर दश दशमी के दश पाँच पंचमियों के पाँच, आठ अष्टमी के आठ और दो पूर्णिमा के दो, इस प्रकार पाँच माह में पच्चीस उपवास करें। तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

97. भावना विधि व्रत

प्रत्येक व्रत की पाँच पाँच भावनाओं के हिसाब से पाँच व्रतों की पच्चीस भावनाओं को भाते हुए एक उपवास, एक पारणा के क्रम से पचास दिन में पच्चीस उपवास करें, तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

98. मंगल त्रयोदशी (धन तेरस) व्रत

कार्तिक कृष्णा १२ के दिन एक बार भोजन करें। त्रयोदशी को उपवास करें, आदिनाथ से विमलनाथ पर्यन्त तेरह जिनेन्द्रो की पूजन करें तथा "ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं विमलनाथ-तीर्थंकराय नमः" स्वाहा इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। अथवा महामन्त्र का जाप्य करें। इस प्रकार तेरह माह तक प्रत्येक माह की त्रयोदशी (१३) को उपवास करें।

99. मुकुट सप्तमी व्रत

सात वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सात को उपवास करें। "ॐ ह्रीं तीर्थंकरभ्यों नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

100. मुक्तावली व्रत

वृहद विधिः- १,२,३,४,५,६,७,६,५,४,३,२,१, इस क्रम से ४९ उपवास तथा तेरह पारणा करें।
मध्यम विधिः- १,२,३,४,५,४,३,२,१, इस क्रम से पच्चीस उपवास एवं आठ पारणा करें।
जघन्य विधिः- नो वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला ७ आश्विन कृष्णा ६-१३ तथा शुक्ला ११, कार्तिक कृष्णा १२ तथा शुक्ला ३, ११ मार्गशीर्ष कृष्णा ११ तथा शुक्ला ३ इस प्रकार एक वर्ष के ९ एवं ९ वर्ष के ८१ उपवास करें। सवर्त्र महामन्त्र का "ॐ ह्रीं वृषभ जिनाय नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

101. मुरजमध्य व्रत

वृहद विधि:- ५,४,३,२,२,३,४,५, इस क्रम से २८ उपवास आठ पारणा करें।
लघु विधि:- २,३,४,५,५,४,३, इस क्रम से २६ उपवास ७ पारणा करें। सर्वत्र महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

102. मुष्टिविधान व्रत

प्रतिवर्ष भाद्रपद, माघ, व चैत्र मास में कृष्णा १ से शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्त पूरे एक माह तक प्रतिदिन एक मुष्ठि प्रमाण शुभ द्रव्य भगवान के चढ़ाकर अभिषेक पूर्वक चतुर्विंशति जिन पूजन करें। "ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यों नम:" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

103. मृदंग मध्य व्रत

वृहद विधि:- १,२,३,४,५,६,७,८,९,८,७,६,५,४,३,२,१, इस क्रम से ८१ उपवास और बीच बीच में एक एक पारणा करें।

लघु विधि:- २,३,४,५,४,३,२, इस क्रम से २३ उपवास और एक एक पारणा करें। सर्वत्र महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

104. मेघमाला व्रत

पाँच वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णा १, ८, १४, तथा शुक्ला १, ८, १४ तथा आसोज कृष्णा १ इन सात तिथियों में सात सात करके कुल ३५ उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

105. मेरू पंक्ति व्रत

अढ़ाई द्वीप में पाँच मेरू पर्वत है। प्रत्येक मेरू पर चार चार वन है। तथा प्रत्येक वन में चार चार चैत्यालय है। अत: प्रत्येक वन के चार चैताल्य के एकान्तर क्रम से ४ उपवास एवं चार पारणा करें। पश्चात एक बेला और अंत में एक पारणा करें। इस प्रकार कुल ८० उपवास २० बेले और १०० पारणा करें। "ॐ ह्रीं पंचमेरू-संबंधी-अस्सी जिनालयेभ्यों नम:" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

106. मोक्षसप्तमी व्रत

सात वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला ७ को उपवास करें "ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नम:" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

107. मौन व्रत

एक वर्ष पर्यन्त पौष शुक्ला ११ से प्रारम्भ करके प्रत्येक मास के प्रत्येक ११ वें दिन मौनपूर्वक १६ पहर का उपवास करें। इस प्रकार कुल २४ उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

108. रक्षाबन्धन व्रत

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को उपवास करें, हाथ में पीला सूत बांधे, तथा "ॐ ह्रीं विष्णु कुमार मुनये नम:" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

109. रत्नत्रय व्रत

३ या ५ वर्ष पर्यन्त प्रत्येक वर्ष के भाद्रपद, माघ व चैत्र मास की शुक्ला द्वादशी को धारण कर १३, १४ और पूर्णिमा का उपवास करें, पश्चात आसौज कृष्णा १ को दोपहर में पारणा करें, तथा "ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यों नम:" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

110. रत्नमुक्तावली व्रत

१,२,१,३,१,४,१,५,१,६,१,७,१,८,१,९,१,१०,१,११,१,१२,१,१३,१,१४,१,१५,१,१६,१,१५, १,१४,१,१३,१,१२,१,११,१,१०,१,९,१,८,१, ७,१,६,१,५,१,४,१,३,१,२, और १ उपवास इस प्रकार अर्थात १ उपवास १ पारणा, २ उपवास १ पारणा, १ उपवास १ पारणा, ३ उपवास १ पारणा, ४ उपवास १ पारणा, १ उपवास १ पारणा के क्रम से २८४ उपवास और ६० पारणाएँ करें। यह व्रत ३४४ दिनों में पूर्ण होता है। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

111. रत्नावली व्रत

श्रावण कृष्णा एकम को एकाशन कर २, ५ और अष्टमी के उपवास तथा शुक्ला ३, ५, ८ के उपवास, इस प्रकार प्रत्येक मास में ६ उपवास करते हुए एक वर्ष में ७२ उपवास करके उद्यापन कर दे । '' ॐ ह्रीं त्रिकाल-सम्बन्धी-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यों नमः'' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

112. रविवार व्रत

९ वर्ष पर्यन्त आषाढ़ शुक्ल पक्ष का अन्तिम रविवार तथा श्रावण एवं भाद्रपद के ८ रविवार, इस प्रकार ९ रविवारों के उपवास करें। अथवा आषाढ़ के अन्तिम रविवार से अगले आषाढ़ के अन्तिम रविवार तक के ४८ रविवारों के उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

113. रूवमणि व्रत

८ वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला ७ को एकाशन, ८ को उपवास ९ को पारणा, १० उपवास, ११ पारणा, १२ उपवास १३ पारणा, १४ उपवास और पूर्णिमा को पारणा करें। त्रिकाल महामंत्र का जाप्य करें।

114. रूद्रबसंत व्रत

किसी भी मास से प्रारम्भ कर क्रमशः २,३,४,५,६,६,४,३,२, इस प्रकार ३५ उपवास और ९ पारणा करें। महामंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

115. रोहिणी व्रत

सात वर्ष या पांच वर्ष पांच मास अथवा पांच वर्ष पर्यन्त रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास करें। अभिषेक पूर्वक श्री वासुपूज्य भगवान की पूजन करें तथा महामंत्र का या '' ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः'' का त्रिकाल जाप्य करें।

116. वज्रमध्य व्रत

इस व्रत की दो विधि है। (१) किसी भी माह में ५,४,३,२,१,२,३,४,५, के क्रम से २९ उपवास और बीच के नो स्थानों में ९ पारणाएँ करे। (२) यहाँ भी १,२,३,४,५,५,४,३,२,१ के क्रम से २९ उपवास और ९ पारणाएँ करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

117. बसन्तभद्र व्रत

किसी भी समय प्रारम्भ कर क्रमशः ५,६,७,८,९, इस प्रकार ३५ उपवास और बीच के स्थानों में एक एक पारणा करें। त्रिकाल महामन्त्र का जाप्य करें।

118. वीरजयन्ती व्रत

भगवान महावीर की जन्मतिथि अर्थात चैत्र शुक्ला १३ को उपवास करें। '' ॐ ह्रीं श्री महावीराय नमः '' मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

119. वीरशासन जयंति व्रत

भगवान महावीर दिव्य ध्वनि की प्रथम तिथि श्रावण कृष्णा १ को उपवास करें। '' ॐ ह्रीं श्री महावीराय नमः '' मन्त्र का जाप्य करें।

120. शिवकुमार बेला व्रत

प्रत्येक मास की ७-८ का बेला, नोवीं का पारणा तथा १३-१४ का बेला और अमावस्या या पूर्णिमा का पारणा, इस प्रकार एक माह में चार बेला, चार पारणा के क्रम से १६ माह में ६४ बेला और ६४ पारणा करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

121. शीलकल्याणक व्रत

मनुभयनी, तिर्यचनी, देवांगना और अचेतन इन चार प्रकार की स्त्रियों में पाँचो इन्द्रियों, मन, वचन, काय तथा कृत, कारित और अनुमोदना से गुणा करने पर १८० भाग होते हैं। ३६० दिन में एकान्तर के क्रम से १८० उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

122. शीलव्रत

पाँच वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष बैसाख शुक्ला ६ (अभिनन्दन भगवान के मोक्ष) के दिन उपवास करें तथा "ॐ ह्रीं अभिनन्दन -जिनाय नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

123. श्रावण द्वादशी व्रत

१२ वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला १२ को उपवास करें। तथा महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

124. श्रुतज्ञान व्रत

वृहद विधिः- ६ वर्ष ७ माह पर्यन्त निम्न प्रकार उपवास करें। मति ज्ञान की २८ प्रतिपदा के २८ उपवास २८ पारणा, ११ अंगो के ११ एकादशियों के ११ उपवास, ११ पारणा, परिकर्म के दो दूज के २ उपवास, २ पारणा, ८८ सूत्रों के ८८ अष्टमियों के ८८ उपवास, ८८ पारणा प्रथमानुयोग का नवमी का १ उपवास, १ पारणा, १४ पूर्व के १४ चतुर्दशीयों के १४ उपवास १४ पारणा, पाँच चूली का के पाँच पँचमियों के ५ उपवास, ५ पारणा, अवधिज्ञान के ६ अष्ठीयों के ६ उपवास ६ पारणा, मनः पर्ययज्ञान के २, चोथो के २ उपवास २ पारणा, केवलज्ञान के एक दशमी का एक उपवास एक पारणा इस प्रकार १५८ उपवास और १५८ पारणाएँ करें।

लघु विधिः- १२ वर्ष ८ माह पर्यन्त - १६ उपवास पूर्णिमा के, ३ तीज के, ४ चौथ के, ५ पंचमी के, ६ छट के, ७ सप्तमी के, ८ अष्टमी के, ९ नवमी के, १० दशमी के, ११ एकादशी के, १२ द्वादशी के, १३ त्रयोदशी के, १४ चतुर्दशी के, १५ पूर्णिमाओं के और १५ अमावस्याओं के इस प्रकार कुल १४८ उपवास करें। प्रत्येक उपवास के साथ एक पारणा आवश्यक है। सर्वत्र "ॐ ह्रीं द्वादशांक श्रुत ज्ञानाय नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

125. श्रुतपंचमी व्रत

५ वर्ष पर्यन्त ज्येष्ठ शुक्ला ५ का उपवास करे तथा "ॐ ह्रीं द्वादशांग-श्रुतज्ञानाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

126. श्रुतस्कन्ध व्रत

उत्तम विधिः- भाद्रपद कृष्णा १ से आश्विन कृष्णा २ तक ३२ दिन में एक उपवास एक पारणा के क्रम से १६ उपवास करें।

मध्यम विधिः- भाद्रपद कृष्णा ६ से शुक्ला १५ पर्यन्त एकान्तर क्रम से १० उपवास करें।

जघन्य विधिः- भाद्रपद शुक्ला १ से आश्विन कृष्णा १ तक १६ दिनों में उपर्युक्त प्रकार ८ उपवास करे। सर्वत "ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत-स्याद्वाद-नय-गर्भित-द्वादशांग-श्रुतज्ञानाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

127. श्रुतिकल्याणक व्रत

क्रमशः ५ दिन लगातार उपवास, ५ दिन जल व षत, ५ दिन एक बार का परोसा, ५ दिन रूक्षाहार और ५ दिन मुनिवृति से अन्तराय टाल कर मौन पूर्वक भोजन करें। इस प्रकार लगातार २५ दिन तक करें, तथा महामंत्र का जाप्य करें।

128. श्वेत पंचमी व्रत

आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन, इन तीन मासों में से किसी भी मास में प्रारम्भ कर ६५ महिनों तक बराबर प्रत्यक मास की शुक्ल ५ का उपवास करें। महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

129. षड्रसी व्रत

उत्कृष्ट २४ वर्ष मध्यम १२ व जघन्य १ वर्ष। ज्येष्ठ कृष्णा १ से ज्येष्ठ पूर्णिमा तक - कृष्णा १ को उपवास और २ - १५ तक एकाशन करें। शुक्ला १ को उपवास २-१५ तक एकाशन करें। "ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

130. षष्ठी व्रत

६ वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला ६ का उपवास करें। तथा "ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

131. षोडश कारण भावना व्रत

१६ वर्ष, ५ वर्ष अथवा एक वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष भाद्रपद, माघ व चैत्र महिनों में कृष्णा १ से अगले मास की कृष्णा १ तक अर्थात ३२ दिन के ३२ उपवास करें। या एकान्तर क्रम से १६ उपवास १६ पारणा करें। या ३२ एकाशना करें। सर्वत्र "ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणभ्यों नमः" का त्रिकाल जाप्य करें।

132. संकट हरण व्रत

तीन वर्ष पर्यन्त भाद्र, माघ व चैत्र मास में शुक्ल १३ से १५ तक उपवास करें या "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्ति कुरू कुरू स्वाहा" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

133. सप्तपरमस्थान व्रत

सज्जाति, ऐश्वर्य, गार्हस्थ, उत्कृष्ट तप, इन्द्रपद, चक्रवति पद, एवं अर्हंत पद की प्राप्ति कराने वाला सप्त परमस्थान व्रत ७ वर्ष पर्यन्त प्रतिवर्ष श्रावण सुदि प्रतिपदा से सप्तमी पर्यन्त सात दिन किया जाता है। सातों दिन उपवास करें, शक्ति न हो तो एक ही वस्तु का आहार ले। दो अनाज या दो वस्तुएँ नहीं लेना चाहिये। प्रत्येक दिन क्रमशः त्रिकाल जाप्य करें।

१. ॐ ह्रीं अर्ह सज्जाति परम स्थान प्राप्ताये श्री अभयजिनेन्द्राय नमः
२. ॐ ह्रीं अर्ह सदग्रहस्थस्थान प्राप्ताये श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय नमः
३. ॐ ह्रीं अर्ह परिव्राज्यपरमस्थान प्राप्तये श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः
४. ॐ ह्रीं अर्ह श्री सुरेन्द्र-परमस्थान प्राप्तये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
५. ॐ ह्रीं अर्ह श्री साम्राज्यपरमस्थान प्राप्तये श्री शीतल नाथ जिनेन्द्राय नमः
६. ॐ ह्रीं अर्ह श्री आर्हन्त्यपरमस्थान प्राप्तये श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः
७. ॐ ह्रीं अर्ह श्री निर्माण परमस्थान प्राप्तये श्री वीर जिनेन्द्राय नमः

134. समवसरण व्रत

एक वर्ष पर्यन्त प्रत्येक चतुदर्शी को एक उपवास करें। इस प्रकार २४ उपवास करें तथा "ॐ ह्रीं जगदापत्-विनाशनाय सकलगुणकरण्डाय श्री सर्वज्ञान अर्हत्परमेष्ठिने नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

135. सर्वाथसिद्धि व्रत

कार्तिक कृष्णा ७ को धारण करके ८ से पूर्णिमा पर्यन्त ८ उपवास करे , प्रतिपदा को पारणा करें। "श्री सिद्धाय नमः" मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।

136. सुखकारण व्रत

जिस किसी मास में प्रारम्भ करके एक उपवास, एक पारणा के क्रम से साढ़े चार माह तक लगातार ६८ उपवास करें। महामन्त्र का जाप्य करें।

137. सुगन्ध दशमी व्रत

दश वर्ष पर्यन्त भाद्रपद शुक्ला १० को उपवास करें और महामन्त्र का त्रिकाल जाप्य करें।